कर्बला का परम् विजयी

लेखकः पंडित श्री लक्ष्मण प्रसाद जी
अनुवादः श्री मिर्ज़ा सज्जाद हुसैन साहब

सृष्टि के प्रारंभ से लेकर आज तक जितने युद्ध एवं राजाओं में परस्पर जो लड़ाईयाँ हुईं हैं उनका कारण या तो दूसरे राजा का देश जीत लेने की इच्छा है अथवा उच्च पद प्राप्त कर लेने की लालसा। कुछ लोग शक्ति एवं वैभव का प्रदर्शन करके दूसरों को प्रभावित करना एवं कुछ लोग तलवारों की झंकारों, तीरों की बौछारों द्वारा अपनी शक्ति व सामर्थ्य प्रकट करना, अपने लिए गौरव की बात समझते हैं। उदाहरण के लिए चंगेज़ ख़ाँ, नेपोलियन, कैसर एवं हिटलर के नाम लिये जा सकते हैं कि जो अपनी क्रूरता एवं अत्याचार में विश्व विख्यात है। परन्तु धन्य हैं वे महापुरुष एवं महन्त जो सत्य एवं धर्म के संरक्षण के लिए पापी अत्याचारियों से टक्कर लेते हैं और असत्य के विरुद्ध, अपमानित जीवन को मान्यपूर्ण मृत्यु पर बलिदान कर देते हैं।

यज़ीद कौन था, और क्या चाहता था और इमाम हुसैन कौन थे और क्या चाहते थे?

कर्बला की घटना सत्य एवं असत्य का टकराव थी, यज़ीद अधर्मी एवं कुकर्मी था और इमाम हुसैन धर्म परायण एवं सत्यवादी। यज़ीद था इस्लाम के ख़ून का प्यासा और हुसैन अपने ख़ून से इस्लाम की प्यास बुझाना चाहते थे। यज़ीद एक विशाल राज्य का सम्राट था, धन व आभूषण उसके खजाने में छलक रहे थे, सेना के बाहुल्य एवं आधिक्य को देखकर लोग कंपित थे। मुसलमानों का अलबेला ख़लीफ़ा अपने मुख पर इस्लाम का आवरण डाले, इस्लाम की शिक्षाओं से खेल रहा था, उनकी खिल्ली उड़ा रहा था। वह कुत्तों का शिकारी, सौंदर्य का भिखारी, सुन्दरियों पर लट्टू होने वाला, संगीत एवं नृत्य का अत्याधिक प्रेमी एवं मदिरा पान का मतवाला था। उसके यहाँ निषेध (हराम) नाम की कोई वस्तु न थी। उसकी काम भावनाएं एवं प्रत्येक समय मदिरा पान की लत ने उसे सत्य एवं धर्म से इतना दूर कर दिया था कि वह स्वयं असत्य तथा अधर्म का पूर्ण चित्र (पुतला) बन गया था। उसकी इच्छा थी कि अपनी सम्पूर्ण शक्ति और सब ख़ज़ाने इस बात पर लुटा दे कि इमाम हुसैन भी उसे धार्मिक अधिष्ठाता स्वीकार कर लें क्योंकि यदि इमाम हुसैन ने मुझे खलीफ़ा मान लिया तो मानों मैंने एक लाख चौबीस हज़ार पैग़म्बरों (ईश दूतों) पर विजय प्राप्त कर ली तथा उनके नाना (हज़रत मोहम्मद) और पिता (हज़रत अली) को परास्त कर दिया और इस्लाम का सदैव के लिए अंत कर दिया परन्तु इमाम हुसैन जो हज़रत मोहम्मद के नवासे, हज़रत अली के छोटे पुत्र और हज़रत फ़ातिमा के सुपुत्र थे और जिन्होंने हज़रत मोहम्मद के कंधों पर चढ़कर, हज़रत अली[अ०] की गोद में रहकर, हज़रत फ़ातिमा का दूध पीकर दीक्षा प्राप्त की थी, उन्होंने अपने पिता हज़रत अली की उन युद्धों की विशेषताओं का भी भली प्रकार अध्ययन किया था जो उन्होंने इस्लाम के प्रचार व प्रसार के लिए किये थे।

हज़रत हुसैन क्योंकर देख सकते थे कि जिस इस्लाम की नींव उनके नाना ने रखी हो जिस पर उनके पिता ने मज़बूत दीवारें उठायीं हो, उसको यज़ीद शराब की बाढ़ में बहा दे। इमाम हुसैन ने यह दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली थी कि मैं अपने और अपने बच्चों के ख़ून के गारे से ऐसा सीमेन्ट कर दूँगा कि सृष्टि के अंत तक चाहे जितने भूकम्प आयें कैसे ही तूफ़ान आऐं परन्तु इस्लाम के क़िले को हिला भी न सकें।

युद्ध का कारण

यज़ीद कहता है कि हुसैन या तो मुझे ख़लीफ़ा स्वीकार कर लें वरन् उनका सर काट लिया जायेगा। इमाम हुसैन कहते हैं कि मैं यज़ीद ऐसे दुष्ट चरित्र व्यक्ति को धार्मिक अधिष्ठाता स्वीकार नहीं कर सकता। यह था युद्ध का कारण।

अब यदि यज़ीद इमाम हुसैन से अपने को ख़लीफ़ा मनवाने में सफल हो गया तो वह विजयी, और हुसैन तो हुसैन उनके किसी दुर्बल से दुर्बल सिपाही (साथी) अथवा स्त्रियों, छोटे से छोटे बच्चे ने भी यज़ीद को ख़लीफ़ा न माना तो हुसैन विजयी।

नव युवक अली अकबर का शव उठाते समय, उस समय जबकि हज़रत अब्बास (इमाम हुसैन के छोटे भाई) की शहादत (हत्या) के कारण हुसैन की कमर टूट चुकी थी, जबकि इमाम हुसैन के हाथों पर उनका दूध पीता बच्चा प्यास की दशा में हुरमुला के तीर के लगने से उलट गया था, जबकि इमाम हुसैन, भतीजे का शव घोड़ों की टापों से कुचलते हुए देख रहे थे, जब इमाम हुसैन के भांजो (बहिन के पुत्रों) के सर तलवार के काटे जा रहे थे या जबकि इमाम हुसैन का वक्षस्थल एवं शरीर तीरों, तलवारों एवं भालों से छन्नी हो रहा था, या जब इमाम हुसैन तीरों पर टिके हुए थे, या शिम्र जब आप पर छुरा फेर रहा था, यदि हुसैन ने यज़ीद को ख़लीफ़ा मान लिया हो तो बताओ? इस्लामी इतिहास का अध्यन करने वालों को धोखा नहीं दिया जा सकता, हुसैन पर ज्यों ज्यों आपत्तियों का अधिक्य होता जाता था मुहँ का रंग और चमकने लगता था। जो जो बलिदान देते जाते थे अल्लाह के आगे आभार प्रदर्शन के हेतु शीश नवाते जाते थे। हमीद बिने मुस्लिम जो यज़ीद की ओर से कर्बला की घटना को लिपिबद्ध करने के लिए रिपोर्टर की हैसियत से नियुक्त था, लिखता है कि उधर इमाम हुसैन के नव युवक सुपुत्र भाला लगने के कारण ज़मीन पर गिरे इधर हुसैन ने कृतज्ञता प्रकट करने के लिए अल्लाह की सच्चाई के आगे शीश नवा दिया। इमाम हुसैन के छः मास के बालक अली असग़र का जब तीर लगने से देहान्त हो गया और हुसैन ने उनको दफ़न कर दिया तो आभार प्रदर्शन के लिए नमाज़ पढ़ी।

यदि ज़ैनब (इमाम की बहिन) ने बाजुओं में रस्सी बंधते समय, चादर छिनते समय, पीठ पर कोड़े खाते समय, बाज़ारों में फिरते समय, राज दरबारों में इब्ने ज़्याद और यज़ीद की क़त्ल की धमकियों के समय, भाई (इमाम हुसैन) का सर कटते समय, यदि ज़ैनब अथवा कुलसूम (इमाम हुसैन की अन्य बहिन का नाम) या इमाम हुसैन और इमाम हसन की आदर्श पत्नियों ने या दूसरी महिलाओं में से किसी ने यज़ीद को ख़लीफ़ा स्वीकार किया हो तो इतिहास में दिखाओं, वरन् मुझ से कहो तो बताऊँ कि ज़ैनब एवं उम्मे कुलसूम के प्रभाव पूर्ण भाषणों एवं वक्तब्यों ने कूफ़े (नगर के नाम) के बाज़रों और शाम (देश का नाम) के दरबार में, कितनी बार शाम और कुफ़ा के अत्याचारी निवासियों को ख़ून के आँसू रुलाया और उनके रोने की आवाज़ों के कारण राजधानी दमिश्क शोकालय बन गया। ये तो इमाम हुसैन की बहिनें और पत्नियाँ आदि थीं, क्या कहें ! उनके घर की वृद्ध दासी फ़िज़्ज़ा का ही यज़ीद को धार्मिक अधिष्ठाता स्वीकार करना इतिहास के पृष्ठों में दिखा दो।

यदि इमाम हुसैन की 4 वर्षीय पुत्री सकीना ने पापी शिम्र के तमांचे खाते समय, या जब कानों को चीर कर आभूषण उतारे थे, या जब प्यास के कारण वह अपने चाचा और पिता को रो रो कर पुकारती थी, या जब उनके 18 वर्षीय भाई अली अकबर का शव शिविर में लाया गया था, अथवा जब उनके छोटे भाई अली असग़र का शव उनके पिता खेमें मे लाये थे, या जब यज़ीद के सामने रस्सी में बंधी खड़ी थीं और गला रस्सी में बंधे होने के कारण घुट रहा था, भूल कर भी यज़ीद को 'ख़लीफ़ा' कह दिया हो। नहीं कदापि नहीं। जब यह सब कुछ नहीं, तो यज़ीद अपने को ख़लीफ़ा मनवाने में असफल रहा।

इमाम हुसैन के ज्येष्ठ पुत्र ज़ैनुल आबदीन कर्बला में दृष्टिगोचर होता है, परन्तु वह दुर्बल तथा रोगी, औषधि तो औषधि जल व अन्न भी नहीं पा रहा है, सामने रण क्षेत्र है, पिता, भाई, चाचा, साथियों एवं प्रेमियों के शव सामने हैं, और वह सब देख रहा है जिनका वर्णन उपयुक्त पंक्तियों में है। परन्तु धन्य हो हुसैन के पुत्र! तेरी क्या प्रशंसा हो, यज़ीद की ख़िलाफ़त से मुंह फिराये, परन्तु तौक़ (गले में भारी वस्तु लटका दी गयी थी), शीश नवाये, हिमालय पर्वत की भाँति कूफ़ा व शाम जाने के कांटों से परिपूर्ण मार्गों में पैदल चलने की तैयारी कर रहा है, कि किसी प्रकार अति शीघ्र कूफ़ा व शाम के दरबारों में यज़ीद के पराजित होने तथा हुसैन के परम विजयी होने की घोषणा कर दे।

प्रथम तो ज़ैनब व उम्मे कुलसूम ने जबकि वे रस्सियों में जकड़ी खड़ी थीं, अपनी सत्यपूर्ण एवं हृदयविदारक वक्तव्यों से पत्थर हृदय दरबारियों को आठ आठ आसूँ रुलवाया तदोपरांत ज़ैनुल आबेदीन वह प्रभावोत्पादक भाषण दिया कि अतंतः यज़ीद को भरे दरबार (राज्य) में कहना पड़ा हाय! हुसैन ने मेरा क्या बिगाड़ा था। मानों वह खुले शब्दों में अपनी पराज्य और इमाम हुसैन की विजय की घोषणा इस प्रकार से कर रहा था कि बस कर्बला के परम् विजयी इमाम हुसैन हैं। इमाम हुसैन ने धार्मिक अधिष्ठाता मनवाने का प्रश्न कुछ इस दृढ़ता के साथ ठुकराया, कि फिर इमाम हुसैन की संतानों में नौ इमाम हुये परन्तु किसी बड़े से बड़े अत्याचारी सम्राट ने भी, कभी किसी से स्वयं को ख़लीफ़ा मानने को नहीं कहा। यद्यपि वे रोज़ क्रमशः अपने अपने समय के इमामों को व्हिप द्वारा ऐहिक लीला समाप्त करते रहे परन्तु अपने को ख़लीफ़ा मनवाने की बात कहने का साहन न कर सके। इसीलिए हुसैन की संतान को फिर कर्बला के दृश्य प्रस्तुत करने की आवश्यकता न पड़ी।

क्योंकि मैं ब्राहमण हूँ, और नाम लक्ष्मण प्रसाद है, इस लिए मेरी सच्ची बातें आपको अखर रही होगीं परन्तु मैं सच बात कहने और लिखने में न संकोच करता हूँ और न भयभीत होता हूँ। यज़ीद जैसे ऐश्वर्य एवं वैभव के अधिकारी राजा जिसने इमाम हुसैन के विरुद्ध ख़ज़ाने के मुँह खोल दिये थे, को छोड़ कर संसार क्योंकर मेरे इमाम हुसैन के साथ हो सकता था कि जिनके पास सांसारिक धन व सम्पत्ति का अत्यंत अभाव था। अरब के भेड़ियों ने यज़ीद (जो मानवता का शिकार खेल रहा था, के कहने पर) इमाम हुसैन के रक्त पीने पर अपने दाँत तेज़ करना आरम्भ कर दिये। अरब के दरिद्र व्यक्ति, भेंड़ बकरी चराने वाले एक एक मुट्ठी चने के कारण यज़ीद के संकेतों (इशारों) पर इमाम हुसैन का खून बहाने के लिए कर्बला के रण क्षेत्र में एकत्रित हो गये। इमाम हुसैन के साथ केवल 71 व्यक्ति थे जिनमें सम्बन्धी (भाई, पुत्र, भतीजे आदि) और साथी सभीसम्मिलित हैं। इसके बिल्कुल विपरीत यज़ीद की ओर से कम से कम 30 सहस्त्र (30,000)।

मैं कहता हू. कि इमाम हुसैन भाग्यशाली थे कि सत्य एवं धर्म का साथ देने वाले 71 प्राणी तो बाहर से मिल गये वरन् उनके नाना हज़रत मोहम्मद को तो इतने भी न मिले। हाँ यदि कोई था तो हज़रत अली, जो हज़रत मोहम्मद के साथ रहकर शत्रुओं के आक्रमण से यज़ीद के दादा अबूसुफ़ियान के अत्याचारी साथियों से रक्षा कर रहे थे। वरन् सब भाग गये थे और उस युद्ध में भागने वालों से कहा जा रहा था कि ऐ मुसलमानों! तुम कहाँ भागे जा रहे हो? मैं तुम्हारा पैग़म्बर (हज़रत मोहम्मद) यहाँ मौजूद हूँ। ऐ मुसलमानों! तुमने तो मेरी सहायता करने की प्रतिज्ञा की थी, परन्तु अब मुझे छोड़कर क्यों भागे जा रहे हो? परन्तु कोई नहीं सुनता था। यहाँ तक कि केवल हज़रत अली, अब्बास, अबु सुफ़ियान बिन हारिस, बनी हाशिम (पैग़म्बर हज़रत मोहम्मद के वंश का नाम) में से और अब्दुल्लाह बिने मसूद बनी हाशिम के अलावा लोगों में शेष रह गये (रण क्षेत्र में) और सब भाग गये। ख़न्दक़ के युद्ध में अम्र के मुक़ाबले में मुसलमानों की गम्भीरता की यह दशा थी कि

जैसे उनके सरों पर कोई पक्षी बैठा है, हिले और पक्षी उड़े। केवल हज़रत अली (इमाम हुसैन के पिता) थे जिन्होंने ख़न्दक़ के युद्ध मं विजय प्राप्त की।

यदी दशा ख़ैबर के युद्ध में हुयी कि मुसलमान प्रत्येक बार भाग कर आए, वह युद्ध भी इमाम हुसैन के पिता हज़रत अली द्वारा विजय किया गया। परन्तु क्या कहना इमाम हुसैन के साथियों का, कि इमाम हुसैन नौ मोहर्रम की रात्रि को बराबर अपने साथियों से कह रहे थे कि ऐ मेरे साथियों और प्रेमियों! तुम बहुत स्वामी भक्त हो, ऐसे अच्छे साथी तो मेरे नाना, पिता एवं ज्येष्ठ भ्राता इमाम हसन को भी न मिले, मैं तुमसे अत्यंत प्रसन्न हूँ, मैंने तुम से प्रतिज्ञा ली थी वह भी तुम पर से हटाये लेता हूँ, जिधर चाहो चले जाओ, परन्तु एक भी न गया। तब इमाम हुसैन ने दीपक बुझा दिया और फिर कहा कि तुम इस रात्रि के अंधकार में यहाँ से निकल जाओ वरन् मेरे साथ रहने में क़त्ल होने के अतिरिक्त धन सम्पत्ति कुछ न मिलेगी। मैं कल क़त्ल कर दिया जाऊँगा, अच्छा है कि तुम मेरे सम्बन्धियों को भी अपने साथ लेते जाओ। जब ये अत्याचारी मुझे क़त्ल कर देंगे तो तुम से कुछ न बोलेंगे। परन्तु वाह रे इमाम हुसैन के साथियों! प्रलय तक तुम्हारी श्रद्धा व प्रेम की गाथायें गायी जाया करेंगी। हुसैन का प्रत्येक साथी कहता था कि ऐ स्वामी! हमें जंगल के भेड़िये खा जायें अगर हम आपको छोड़कर जायें। यदि आपकी सहायता करते हुये हम 70 बार भी क़त्ल किये जायें, फिर हमारे शवों को जलाकर राख कर दिया जाये और वह राख हवा में उड़ा दी जाये, फिर यदि हमें जीवन प्राप्त हो तो भी आपकी सहायता से मुंह न मोड़ेंगे। लीजिए हमने तलवारों की म्यानें (वह आवरण जिनमें तलवारें रखी जाती हैं) तोड़कर फेंक दी है, अब ये खुली हुई तलवारें हैं और आपके शत्रुओं के शरीर हैं। जब तक हम जीवित हैं, आप पर आँच नहीं आने देंगे। परन्तु अब प्यासे बच्चों का रूदन एवं क्रन्दन असहनीय है। आज्ञा दीजिए कि उनके लिए पानी ले आयें। गये और पानी लाये। स्वयं जख़्मी हुए परन्तु मशक (जिसमें पानी भरा जाता है) को बचा लाये। कहते थे कि अल्लाह को कोटि कोटि धन्यवाद देते हैं कि हम सकीना (इमाम हुसैन की 4 वर्षीय पुत्री) की मशक की ढाल बन गये। परन्तु शोक कि वह पानी बह गया और बच्चे प्यासे ही रहे। यह वीरता एवं अपार भक्ति व श्रद्धा का वह आदर्श है जिसे इतिहास भुला नहीं सकता। इसलिए इमाम हुसैन अपने साथियों पर अभिमान करते थे।

यद्यपि इमाम हुसैन अपने प्रेमियों, साथियों एवं सम्बन्धियों के साथ कर्बला के रणक्षेत्र में शहीद हो गये और यज़ीद की सेना विजय के बाजे बजाती हुयी कूफ़ा वापस हुयी परन्तु देखो आज कर्बला पर किसका अधिकार है। फ़ुरात नदी पर किसका अधिपत्य है। आज कर्बला इमाम हुसैन की राजधानी बनी हुयी है। नदी पर उनके भाई अब्बास का क़ब्ज़ा है जो इमाम हुसैन की ओर से प्रलय तक इस पर पहरा देते रहेंगे। कर्बला की भूमि पर न यज़ीद है न यज़ीद का मिशन, केवल हुसैन हैं और उनका मिशन। यह है इमाम हुसैन की वह पूर्ण विजय, जिसका उदाहरण संसार में मिलना दुष्कर ही नहीं, बल्कि असम्भव है परन्तु शोक का विषय है कि कुछ नाम मात्र के मुसलमान अब भी यज़ीद की प्रशंसा करके उसे जीवित रखना चाहते हैं और चाहते हैं कि इमाम हुसैन का वर्णन न किया जाये किन्तु उनका यह स्वप्न साकार न होगा।

